2018 - 19

ONE DAY MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL SEMINAR ON

PLIGHT OF INDIAN FARMERS : ISSUES AND CHALLENGES

भारतीय शेतकऱ्यांच्या व्यथा वेदना, दशा : समस्या व आव्हाने

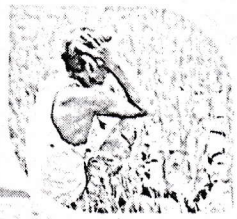

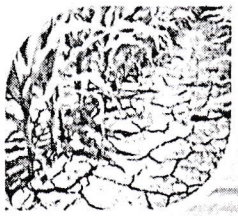

Saturday, 16th February, 2019

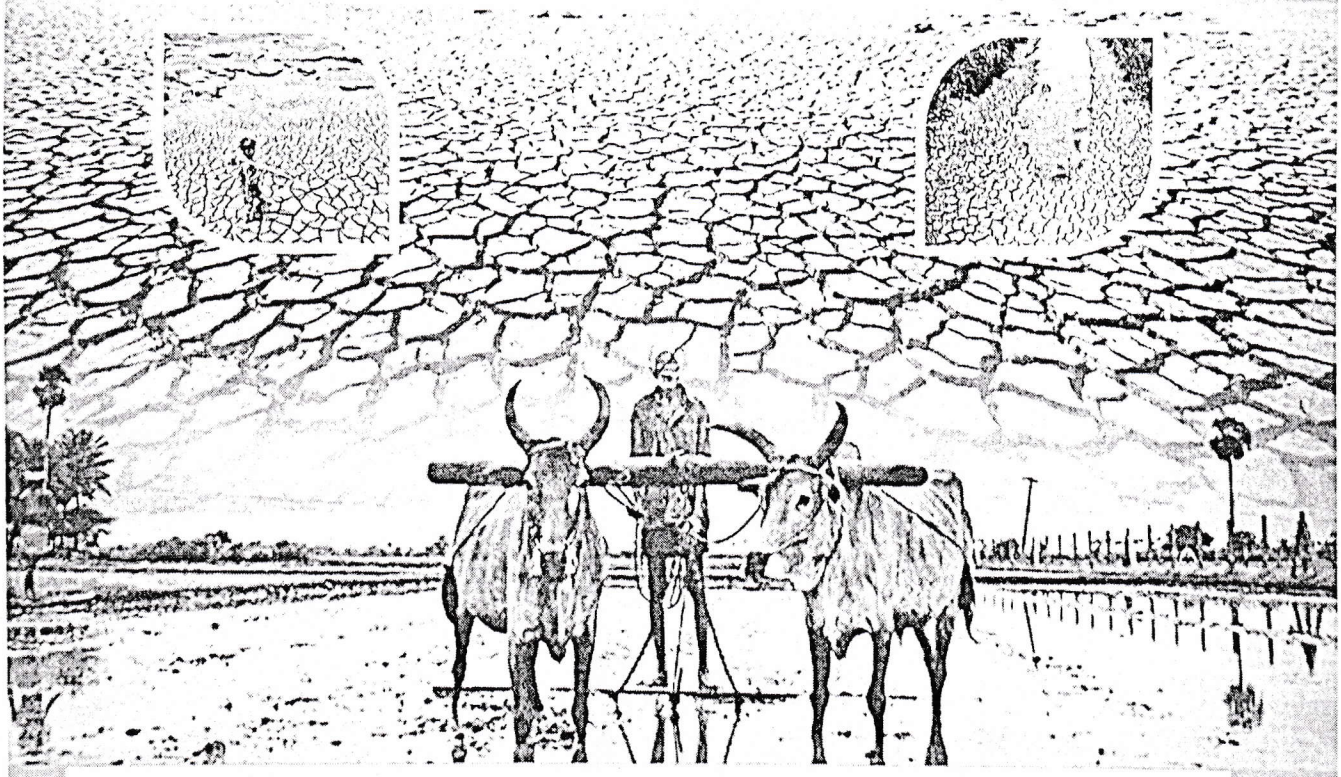

Organized by

Tararani Vidyapeeth's

KAMALA COLLEGE, KOLHAPUR

NAAC Reaccredited 'A' grade (3.12 CGPA)
College with Potential for Excellence
www.kamalacollegekop.edu.in

Sr. No.	Title	Author	Page No.
248	शेतक–यांच्या आत्महत्या आणि कौटुबिक परिणाम–कारणे, उपाय	प्र.प्राचार्य डॉ.पूजा नरवाडकर	1047-1051
249	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : कारणे व उपाय	प्रा. नासिर एम. पठाण	1052-1055
250	महाराष्ट्र राज्य शासनाच्या कृषीविषयक धोरणे व योजनांचा थोडक्यात आढावा (२०१४ ते २०१८)	श्रीम. सरकाळे तेजश्री तानाजी	1056-1061
251	शेतकरी वेदनेचा हुंकार – अवकाळी विळखा	प्रा.डॉ. सागर अशोक लटके	1062-1065
252	भारतीय शेतकरी : परंपरा व सामाजिक जीवन	डॉ. दीपा समीर बिरनाळे.	1066-1068
253	शेतक-यांच्या माहितीविषयक गरजा आणि ग्रंथालयांची भूमिका	सौ. आशा चंद्रशोक जिरगे	1069-1072
254	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : कारणे व उपाय	श्रीमती मनीषा राजाराम माने	1073-1077
255	मराठी कादंबरीतील शेतकरी जीवन	प्रा. ज्ञानेश्वर किसन म्हात्रे	1078-1080
256	ग्रामीण कवितेतील दुष्काळग्रस्त शेतकऱ्यांचे जीवनदर्शन	प्रा.कु.लक्ष्मी पवार	1081-1086
257	शेतकऱ्यांची आत्महत्या : कारणे व उपाय	श्री एन.पी.महागांवकर (ग्रंथपाल)	1087-1092
258	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : कारणे व उपाय	वर्षा जजजे	1093-1095
259	"शेतकऱ्यांची कौटुंबिक समस्या - कौटुंबिक हिंसाचार" एक अभ्यास	डॉ. सौ. वर्षा यशोधन पाटील	1096-1100
260	कृषि विषयाला मुद्रीत माध्यमांनी दिलेले स्थान : दैनिक लोकसत्ता विशेष अभ्यास	डॉ. शिवाजी जाधव	1101-1104
261	'साखरफेरा' में गन्ना उत्पादक किसानों की त्रासदी	डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील	1105-1107
262	होरी नाटक में चित्रित किसान जीवन	देवकाते भागवत भगवान	1108-1110
263	आधुनिक हिंदी कविता में भारतीय किसान का प्रतिबिंब	डॉप्रदीप लाड.	1111-1116
264	भारतीय किसानों की आत्महत्याएँ एक समस्या	डॉ. संजय चिंदगे	1117-1119
265	'फाँस' उपन्यास में चित्रित किसान की आत्महत्या : कारण और उपाय"	प्रा. डॉ. संजय चोपडे,	1120-1122
266	२० वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामीण उपन्यासों में किसान जीवन ('डूब' और 'इदन्नमम' के संदर्भ में)	श्री. संतोष शंकर साळुंखे	1123-1125
267	हिंदी कविता में कृषिजीवन का चित्रण	प्रा. सौ. सुपर्णा संसुध्दी	1126-1128
268	२१ वीं सदी के उपन्यासों में कृषक ('आखिरी छलांग' और 'फाँस' के संदर्भ में)	प्रा. पाटील वर्षा गजानन	1129-1131
269	'फाँस' उपन्यास में चित्रित किसान विमर्श	प्रा. श्रीदेवी बबन वाघमारे	1132-1134
270	भारत में किसानों की आत्महत्या एक चिंतन	सागरकुमार विट्ठल जाधव	1135-1137
271	बरखा रचाई : एक यथार्थ	सारिका राजाराम कांबळे	1138-1140
272	नंगातलाई का गॉव : जमींदार और किसान संघर्ष	सौ. रूपाली प्रषांत भोसले	1141-1142
273	'किसान जीवन के वास्तविकता का जीवंत दस्तावेज संजीव का फाँस'	लेफ्ट. डॉ. रविंद्र पाटील	1143-1144
274	किसान की अंतिम पीढ़ी का दर्द : अकाल में उत्सव	डॉ. प्रकाश राजाराम मुंज	1145-1146
275	हिंदी उपन्यासों में किसान विमर्श	डॉ.कल्पना किरण पाटोळे	1147-1150

'किसान जीवन के वास्तविकता का जीवंत दस्तावेज संजीव का फाँस'

लेफ्ट. डॉ. रविंद्र पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग.

विष्वस्तर पर भारत की पहचान एक कृषिप्रधान देष के तौर पर है। भारत की लगभग ७० प्रतिषत जनता कृषि पर निर्भर है। खासकर गाँवो में रहनेवाले लोगों का गुजारा कृषि पर ही निर्भर है। परंतु वर्तमान परिवेष में बारीष की कमी, प्राकृति संकट तथा राजनीतिक उदासीनता के चलते बहुत ही बुरी परिस्थिति से गुजर रही है। आज किसान के सामने सबसे भयंकर बिमारी आत्महत्या की बिमारी है। कोई भी किसान आत्महत्या अपनी मर्जी से नहीं करता जब उसके जिने के सभी रास्ते बंद हो जाते है तो उसे जिंदगी से मौत अच्छी लगने लगती है। आज का किसान अनेक समस्याओं से ग्रस्त है वह विचित्र मानसिकता से गुजर रहा है। इसके लिए वर्तमान राजनीतिक परिवेष भी बहुत बड़ा कारण है। अतः उसे आज किसानों की आत्महत्या न कहकर हत्या कहना उचित होगा। यह तो व्यवस्था द्वारा की गई हत्या है।

सन १९९० के बाद भूमंडलीकरण और सूचना प्रोद्योगिकी ने मनुष्य जीवन के मायने ही बदल दिए है। आजादी के समय देष की जनता ने जो रोटी, कपडा और मकान का सपना देखा था ओ तो पूरे नहीं हुए है परंतु अनेक नई समस्याएँ जरुर उत्पन्न हुए है। दिन दहाडे प्रकृति संहार हो रहा है। अंध आधुनिकता के चलते मनुष्य आत्मकेंद्रीत होता जा रहा है। इसी के परिणाम के चलते सुसंस्कार, नैतिकता जैसी बातों की दिन दहाडे हत्या हो रही है। इन्हीं बातों का यथार्थ चित्रण हिंदी उपन्यास साहित्य में बखुबी से हुआ है। प्रेमचंद का 'गोदाम', रेणू का 'मैला आँचल', जगदीपचंद्र का 'धरती धन-न अपना', नागार्जून का 'बलचनामा', षिवप्रसाद सिंह 'अलग-अलग वैतरणी विवेकी राय का सोनामाटी, संजीव का 'फाँस' आदि सभी उपन्यासों में किसान विमर्ष का खुलकर चित्रण हुआ है। संजीव का फाँस उपन्यास किसान विमर्ष का जिवंत दस्ताऐवज है।

महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र को केंद्र में रखकर संजीव ने फाँस उपन्यास की रचना की है। विवेच्य उपन्यास में यवतमाल जिले के पूरवी छोर के 'बनगाँव' के किसानों की वास्तविकता चित्रित है। विवेच्य उपन्यास के संदर्भ में डॉ. मैनेजर पांडेय लिखते हैं, "भारत में अब तक तीन लाख से अधिक संख्या में किसानों ने आत्महत्या की है। यह मानवता के इतिहास की एक भयावह त्रासदी है और मानवीय समाज-व्यवस्था का भीषण अपराध भी। इस त्रासदी और अपराध के प्रतिरोध की प्रवृत्ति पैदा करनेवाला यह उपन्यास 'फाँस' है। प्रेमचंद के कथासाहित्य की प्रगतिषील परंपरा का आज की स्थिति में विकास करेगा। संजीव ने इससे पहले भी ऐसी कहानियाँ और उपन्यास लिखे है। यह उपन्यास सजीव की मूलग्रामी और अग्रगामी कथा दृष्टि का एक प्रमाण है।"[१]

विवेच्य उपन्यास 'बनगाँव' में षिवपकंर और पकुंतला अपनी दो बेटियाँ कला और सरस्वती के साथ रहते है। उनका जीवन पूरी तरह से खेती पर निर्भर है। कड़ी मेहनत कर के दोन्हों बेटियों को पढ़ाते है। कई बार गाँववालों के ताने सुनने पडत है। छोटी बेटी कला अपनी स्टाईल से जिंदगी जिना पसंद करती है। इससे पिताजी षिवपंकर चिंतित नजर आते है। षिवपंकर हरबार खेत जोतता जरुर है। परंतु प्रकृति के सामने हरबार हार जाता है। परिणामतः वह अपने परिवारवालों को कहता है। "इस बार तो फसल की कई उम्मीद नहीं, दो-चार किलो तूअर, बाकी कुछ नहीं। मुझे लगता है, मैं बीच मझधार में फँस गया हूँ। न आगे बढ़ पा रहा हूँ, न लौट पा रहा हूँ। मेरी हालत अपनी लालू जैसी होती जा रही है।"[२] षिवपंकर के साथ-साथ सदा, मोहनदास, नाना जैसे किसान भी अनेक समस्या से ग्रस्त है। विवेच्य उपन्यास के गाँव के किसान कुछ पुरक काम भी करते है। गाँव की औरतें वन में महुआ चुनने का काम करती है परंतु वनाधिकारी उन्हें परेषान करते रहते है। मका, कपास आदि से उनकी जीविका चलना असंभव है। ज्यादा उपज की आस किसानों को बरबादी के कगार पर लाकर खडा कर देती है।

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से संजीव ने विदर्भ के सुखाग्रस्त किसानों की वास्तविकता का चित्रण किया है। किसान आंदोलन में अग्रणी मोहनदास वाघमारे बीपीएल के कार्ड पर गेहूँ खरिदता है। अपनी जीविका चलात

है। वह अपने ही गाँव में अजनबी का जीवन जिता है। सरकार भी किसानों के जले पर नमक डालने का काम करती है। हरबात को राजनीति से जोडकर देखते है।

उनके लिए किसानों की समस्या महत्वपूर्ण न होकर आनेवाला चुनाव अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। चुनाव से पहले पैकेज घोषित करके वे इस समस्या को दूर करने की हिंडोरा पिटते है। अखबारबाजी की जाती है। किसानों का कर्जा हासिल करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। परिणाम के चलते गाँव के आम किसानों को साहूकार से दूगने ब्याज पर कर्जा लेना पडता है। सबसीडी के नाम पर सरकार की ओर से हायब्रीड बीये दे दी जाती है। सरकार द्वारा दिए गए बीटी कॉटन और हायब्रीड बीयें गाँव के वातावरण से अपना मेल नहीं बना पाते परिणामतः माल किसानों के लिए बोझ बन जाती है। इस प्रसंग का चित्रण करते हुए उपन्यासकार लिखते है "लेकिन यहाँ तो सब गलत ही गलत है, इसीलिए की कोई भी चीज अपनी माटी पानी की नहीं। विदेशी बीज, विदेशी कर्ज, विदेशी गाय विदेशी नीति और यहाँ का सुखा किसान और सूखी धरती।"[3] अतः स्पष्ट है कि समस्याओं पर बुनियादी हल निकालने के बजाय सिर्फ मरहमपट्टी की जाती है। किसानों के आत्महत्या पर राजनीति गर्माती है। किसानो को मिलनेवाली सहाय्यता राशी में करोडो रुपयों का भ्रष्टाचार होता है।

विवेच्य उपन्यास में संजीव ने मंथन समारोह के माध्यम से कृषि समस्या और किसान आत्महत्या को प्रस्तुत किया है। किसान आम आदमी और किसानी के बारे में बुनियादी चिंतन किया है।

विवेच्य उपन्यास में आदिवासी था अन्य पिछडी जाति के लोग कुनबी मराठों की संख्या बहुसंख्य है। इसके संसदर्भ में आदिवासी लोग कहते है, "इनका प्राचीन गौरव, महानता का बोझ। दूसरी ओर इन्हीं के जाति के कुछ नौकरी वालों का मोटारसाइकिल, रंगीत टीवी, फ्रिज। यह हकीकत जितनी बड़ी खेती, उतरना ज्यादा लॉस। दोनों ढलकर इन्हें ले जाते है आत्महत्या तक। रिजर्वेशन की डिमांड भी है।"[4] अतः यहाँ कुणबी मराठा जाति के लोग भौतिक सुखों के पिछे पडते हैं। परिणाम के चलते ऋणग्रस्त बन जाते हैं।

निष्कर्षः-

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि 'फाँस' में संजीव ने किसान जीवन के सारे पहलूओं को सुक्ष्मता से चित्रित किया है। प्राकृतिक एवं मानवनिर्मित आपदाओं के कारण किसान को किन-किन समस्याओं से गुजरता पडता है इसका सजीव चित्रण प्रस्तुत है। उपन्यास में संजीव की दृष्टि समाजपास्त्रीय दिखाई देती है। पिवाजी महाराज, पाहू महाराज, बाबासाहेब आंबेडकर, संत गाडगेबाबा, आण्णा हजारे, पोपट पवार, सिंधुताई सकपाळ के कार्य का उल्लेख प्रसगोनुसार मिलता है। संजीव ने विदर्भ के किसानों के जरिए भारत के कनाटक, मध्य-प्रदेष, गुजरात, पंजाब, छत्तीसगड, बुंदेलखंड आदि किसानों की व्यथा को वाणी दी है। अतः किसान जीवन के वास्तविकता की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित में उपन्यासकार सफल हुआ है।

संदर्भ संकेतः-

१. सं. प्रो. अंबादास देषमुख, 'वैष्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य' पृष्ठ, १७३.
२. संजीव, 'फाँस', वाणी प्रकाशन, प्रथम, पृष्ठ. १६
३. वही, ६६.
४. वही, ६१.